दिनांक 31 जनवरी, 2010 को लखनऊ में सीमैप द्वारा आयोजित
किसान मेला हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन।
———————

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौध संस्थान (सीमैप) द्वारा आयोजित इस किसान मेले में शामिल होकर मुझे अत्यधिक खुशी हो रही है।

आज का यह अवसर बहुत महत्वपूर्ण है जब बड़ी संख्या में प्रदेश के और अन्य प्रदेशों के किसान इस मेले में आये हुए हैं। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि सीमैप द्वारा पिछले कई वर्षो से आज ही के दिन यह मेला आयोजित किया जा रहा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कहते थे कि ''सच्चा भारत गाँवों में बसता है। यदि आपको भारत की सच्ची तस्वीर देखनी है तो गाँवों में जाना होगा। ग्रामीण विकास की कोई भी योजना कृषि एवं कृषकों के विकास से ही प्रारम्भ होती है। कृषि हमारी जीवन पद्धति एवं संस्कृति का एक अंग है। कृषि एवं बागवानी मे उत्पादन बढ़ाकर और इन पर आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित करना, बेरोजगारी की समस्या से निपटने का एक तरीका हो सकता है''।

आज मैं यह भी कहना चाहूँगा कि देश के कृषक समाज को उद्यमी तथा भविष्य के उद्योगपति के रूप में विकसित किया जाये। वैज्ञानिक शोध एवं विकास तथा प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण और तकनीकी ज्ञान के प्रचार–प्रसार से स्पष्ट हो चुका है कि आर्थिक रूप से

महत्वपूर्ण वनस्पतियों पर आधारित औषधियों, सुगन्ध तथा अन्य उपयोगी उत्पाद व यौगिक जहाँ एक ओर विश्व स्तर के व्यापार के आधार बन सकते हैं, वहीं दूसरी ओर इनमें मानव जीवन को बेहतर बनाने की क्षमता भी विद्यमान है।

हमारे वैज्ञानिकों के अथक शोध व प्रयास से नित नई–नई औषधियों का विकास, उच्च गुणवत्ता युक्त फार्मा स्यूटिकल तथा अन्य स्वास्थ्यवर्द्धक उत्पाद पौधों से प्राप्त किये जा रहे हैं। औषधीय एवं सगंध पौधों पर आधारित व्यापार विश्व भर में बढ़ रहा है और अब समय आ गया है कि हमारे कृषक अपनी परम्परागत फसलों के साथ औषधीय एवं सगंध फसलों की उन्नत खेती कर, न केवल उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करें, बल्कि अपनी आय में भी बढ़ोत्तरी

कर सकें। क्योंकि किसानों को जब उनकी उपज का लाभकारी एवं प्रतिस्पर्धात्मक मूल्य मिलेगा तभी उनकी आर्थिक दशा में सुधार होगा और उन्हें अपना उत्पादन और ज्यादा बढ़ाने की प्रेरणा मिलेगी।

वस्तुतः देश के विकास का ताना–बाना प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग पर आधारित है। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वे हमेशा के लिए समाप्त न हों जायें तथा उनकी अक्षुण्यता विद्यमान रहे, ताकि जन–सामान्य की बुनियादी आवश्यकताएं दीर्घावधि तक बराबर पूरी होती रहें।

आज प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, उनकी वर्तमान स्थिति तथा क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर कृषि–प्रबन्धन को एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप देना समय की मांग है। कृषि के

विकास के लिए आधुनिक तकनीकी एवं संसाधनों का भरपूर प्रयोग आवश्यक है।

यहाँ पर मैं यह भी कहना चाहूँगा कि आज भारत के साथ ही पूरे विश्व में खाद्यान्न की मांग बढ़ी है। हमें कृषि उत्पादकता को और बढ़ाना होगा, जिससे खाद्यान्नों की उपलब्धता बनी रहे। विशेषकर उन उत्पादों पर ध्यान देना है, जिनकी आपूर्ति कम है। इसके लिये नई तकनीकों, बेहतर बीजों, उन्नत कृषि तरीकों, प्रभावी जल प्रबन्धन तकनीकों और उन अधिक मजबूत ढांचों की आवश्यकता है, जो किसानों को वैज्ञानिकों से जोड़े। इसके साथ ही उद्योग और कृषि दोनों के लिए लाभकारी सम्भावनाओं का भी पता लगाया जाना

चाहिए। जैसे खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को कृषि क्षेत्रों के पास ही स्थापित करने से ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन लाया जा सकता है।

देश के कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण संस्थानों को कृषि एवं उद्यान उत्पादन में अपेक्षित अभिवृद्धि करने के उद्देश्य से आधुनिकतम उत्तम से उत्तम तकनीक की खोज को आगे बढ़ाना चाहिए। अनुसंधानों को प्रयोगशाला से खेतों एवं उद्यान तक पहुँचाकर किसान भाईयों एवं बागवानों का सही मार्गदर्शन करने से ही वैज्ञानिक प्रयोगों का लाभ समाज को मिल सकेगा।

आशा है कि इस आयोजन में आने वाले किसान यहाँ औषधीय एवं सगंध फसलों की नई प्रौद्योगिकियों की जहाँ जानकारी प्राप्त करेंगे, वहीं वैज्ञानिकों को किसानों की आवश्यकता के अनुरूप आगे

और शोध करने का अवसर प्राप्त होगा। सीमैप का यह प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय है । इसके लिये मैं सीमैप के सभी अधिकारियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद – नमस्कार।